Total No. of Printed Pages—4

5 SEM TDC DSE HND (CBCS) 1 (H)

2024

(November)

HINDI

(Discipline Specific Elective)

(For Honours)

Paper : DSE–1

(असमीया भाषा एवं साहित्य)

Full Marks : 80

Pass Marks : 32

Time : 3 hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्य में दीजिए : 1×8=8

(क) असमीया साहित्य का आदिकाल कब से माना जाता है?

(ख) शंकरदेव के बरगीत की भाषा क्या है?

(ग) 'जोनाकी' पत्रिका का प्रकाशन कब हुआ था?

(घ) 'गोपाल गोवाली पाराते नाचे' बरगीत के रचनाकार कौन हैं?

(ङ) असमीया सहित्य के मध्यकाल के शंकरी युग के प्रवर्तक कौन हैं?

(च) मानवतावाद पर आधारित चंद्रकुमार आगरवाला की कौन-सी कविता आपके पाठ्यक्रम में है?

(छ) 'मि० पियेनार' किस कहानी के प्रमुख पात्र हैं?

(ज) सैयद अब्दुल मलिक किस युग के कहानीकार हैं?

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 4×4=16

(क) असमीया साहित्य के विकास में 'जोनाकी' पत्रिका के योगदान पर प्रकाश डालिए।

(ख) 'कीर्तनघोषा' पर टिप्पणी लिखिए।

(ग) असमीया समाज में नव-वैष्णव धर्म का प्रचलन किस प्रकार हुआ? लिखिए।

(घ) असमीया कहानी में 'सैयद अब्दुल मलिक' के योगदान पर प्रकाश डालिए।

(ङ) 'तेजीमाला' लोकगीत के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है, स्पष्ट कीजिए।

(च) माधवदेव का सामान्य परिचय दीजिए।

(छ) 'बेजबरुवा युग' पर टिप्पणी लिखिए।

3. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8×2=16

(क) ईश स्वरूपे हरि सब घटे बैठक
जैचन गगन बियापि।
निंदावाद पैशुन्य हिंसा हरि
तेरि करोहो हामु पापी॥
काकु शंकर कर करहु करूणा
जोन छाड़हुँ राम वाणी।
सब अपराधक बाधक तुवा नाम
ताहे शरण लेहु जानि॥

अथवा

सब गोपी मिलि बावे हात तुलि
बोले भाल करि नाचा।
हाते तार खारु दिबो चिनि लारु
बापु पुरि तोर बांछा॥
गोपीर बचने बर लोभ पाइ
नाचिल नानान भावे।
कहय माधव आन गति नाइ
भज गोविन्दर पावे॥

(ख) मानुहे मानुहे इमान हे मरम
चकु लो परे सुवँरि।
मानुहर चोसालत माधुरी फुटिले
मानुहे निचिनि हाय!
सारि तुलि छिडि मोहारि पेलाले
मानुहर मरमो नाइ!
मरमर पानी नोहोवा ठाइत
केनेकै विश्वास थाय?

अथवा

आजि नोहोवा तुमि सुन्दरी पृथिवी
जनमर युगमीया तुमि,
तुमि मोर अनन्तर शांतिर जिरणि
अतीतर स्वप्न लीला भूमि।
कत बार जनमिलो तोमार कोलाते
गैछिलों आकौ उभटि
अपूरण करमर भार बांधि लइ
घूरि घूरि आहिलो उभटि।

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 10×4=40

(क) असमीया भाषा के विकास पर प्रकाश डालिए।

(ख) 'शंकरी युग' असमीया साहित्य का स्वर्गयुग है? इस कथन की समीक्षा कीजिए।

(ग) 'मानव वंदना' कविता के अंतर्निहित भावों का वर्णन कीजिए।

(घ) 'मरम-मरम लागे' कहानी का सारांश लिखिए।

(ङ) शंकरदेव या माधवदेव के बरगीत की विशेषताएँ लिखिए।

(च) असमीया साहित्य के विकास में लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा के योगदान को रेखांकित कीजिए।

★★★

Total No. of Printed Pages—4

5 SEM TDC DSE HND (CBCS) 2 (H)

2024

(November)

HINDI

(Discipline Specific Elective)

(For Honours)

Paper : DSE–2

(छायावाद)

Full Marks : 80

Pass Marks : 32

Time : 3 hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्य में दीजिए : 1×8=8

(क) छायावाद को 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह' किस आलोचक ने कहा है?

(ख) 'सुंघनी साहु' घराने में किस छायावादी कवि का जन्म हुआ था?

(ग) 'सरोज स्मृति' में कितने अनुच्छेद हैं?

(घ) निराला के बचपन का नाम क्या था?

(ङ) पंत को किस कृति पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया?

(च) कौन-सा छायावादी कवि आकाशवाणी में सेवारत था?

(छ) महादेवी वर्मा की शैली क्या थी?

(ज) महादेवी वर्मा की मृत्यु कहाँ हुई थी?

2. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8×4=32

(क) "नील परिधान बीच सुकुमार
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग,
खिला हो ज्यों बिजली का फूल
मेघ-वन बीच गुलाबी रंग॥"

अथवा

"जो पथिक होता कभी इस चाह में
वह तुरत ही लुट गया इस राह में
मानवी या प्राकृतिक सुषमा सभी
दिव्य शिल्पी के कला-कौशल सभी।"

(ख) "आँसुओं सजल दृष्टि की छलक
पुरी न हुई जो रही कलक
प्राणों की प्राणों में दब कर
कह ली लघु-लघु उसाँस में भर :
समझता हुआ मैं रहा देख,
हटती भी पथ पर दृष्टि टेक।"

अथवा

"उगे अरुणाचल में रवि,
आई भारती-रति कवि-कंठ में,
क्षण-क्षण में परिवर्तित
होते रहे, प्रकृति पट,
गया दिन, आई रात,
गई रात, खुला दिन,
ऐसे ही संसार के बीते दिन, पक्ष, मास,
वर्ष कितने ही हजार—

(ग) "शव को दें हम रूप-रंग, आदर मानव का?
मानव को हम कुत्सित चित्र बना दें शव का?
गत युग के बहु धर्म-रूढ़ि के ताज मनोहर,
मानव के मोहान्ध हृदय में किए हुए घर।"

अथवा

"स्वर्ण शस्य पर-पदतल लुंठित,
धरती सा सहिष्णु मन कुंठित,
क्रंदन कंपित अधर मौन स्मित,
राहु ग्रसित
शरदेन्दु हासिनी।"

(घ) "दूसरी होगी कहानी
शून्य में जिसके मिटे स्वर, धूलि में खोई निशानी,
आज जिस पर प्रलय विस्मित,
मैं लगाती चल रही नित,
मोतियों की हाट औं चिनगारियों का एक मेला!"

अथवा

"मैं क्षितिज-भृकुटि पर घिर धूमिल,
चिन्ता का भार बनी अविरल,
रज कण पर जल-कण हो बरसी,
नव जीवन-अंकुर बन निकली।"

3. प्रसाद जी के काव्य में प्रकृति-चित्रण की विशेषताओं पर अपने विचार दीजिए। 10

अथवा

जयशंकर प्रसाद के परिवार, जीवन-वृत्त, रुचियों एवं साहित्य-सेवा का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

4. "निराला-काव्य की मूल प्रेरक शक्ति उनकी आध्यात्मिक भावना रही है।" इस कथन को ध्यान में रखते हुए निराला जी की रहस्य-भावना का विवेचन कीजिए। 10

अथवा

आपने निराला जी की जो रचनाएँ पढ़ी हैं, उनके आधार पर निराला जी के कवि-व्यक्तित्व के विकास का मूल्यांकन कीजिए।

5. "पन्त का काव्य छायावादी काव्य-शैली के प्रतिनिधि गुणों से युक्त है।" सिद्ध कीजिए। 10

अथवा

सुमित्रानंदन पंत का संक्षिप्त परिचय देते हुए 'द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र' कविता का सारांश लिखिए।

6. महादेवी वर्मा के काव्य के छायावादी स्वरूप को स्पष्ट कीजिए। 10

अथवा

'जीवन विरह का जलजात' कविता के कथानक पर प्रकाश डालिए।

★★★